अध्याय–11

जन्तु–जगत : सुरक्षा और संरक्षण

एक कहानी :

सिद्धार्थ बगीचे में रंग–बिरंगे फूलों और पक्षियों को देखकर खुश हो रहा था। अचानक एक हंस उसके सामने आ गिरा। उसे एक तीर लगा था और उसके शरीर से खून बह रहा था। घायल हंस को सिद्धार्थ ने धीरे से उठा लिया।

सिद्धार्थ ने उसके शरीर से तीर निकाल दिया और उसके घाव को पानी से धोया। उसने अपने कपड़े को फाड़कर हंस के घाव पर मरहम पट्टी की।

उसी बीच उसका चचेरा भाई देवदत्त तीर–धनुष लिए आ धमका। देवदत्त ने कहा, ''तुम मेरे हंस को छोड़ दो। यह हंस मुझे दे दो। मैंने उसे तीर से गिराया है।'' सिद्धार्थ ने देवदत्त को हंस देने से इंकार कर दिया।

सिद्धार्थ ने कहा, ''ऐसा करो हम लोग राज दरबार में चलते हैं, वहीं इसका फैसला हो जायेगा।'' देवदत्त ने कहा, ''चलो राज दरबार, हंस तो मेरा ही है, फैसला मेरे हक में ही होगा।''

आप बताइए कि यह हंस किसे मिलना चाहिए और क्यों?

———————————————————————————————

———————————————————————————————

सिद्धार्थ राज दरबार में हंस लिए पहुँचा और देवदत्त तीर–धनुष लिए।

राजा ने पूछा, ''क्या बात है? तुम लोग यहाँ क्यों आए हो?''

देवदत्त ने कहा, ''सिद्धार्थ ने मेरा हंस ले लिया है। मैंने इसे तीर मार कर गिराया था।''

सिद्धार्थ ने कहा, ''महाराज! मैंने घायल पड़े हंस को बचाया है।''

महाराज शुद्धोदन ने कहा, ''प्रश्न यह है कि किसी की जान बचाना अच्छा है या जान लेना।''

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

मंत्रीगण एक स्वर में बोले, ''जान बचाना।''

महाराज ने न्याय किया, ''सिद्धार्थ ने हंस की जान बचायी है, इसलिए हंस सिद्धार्थ को दे दिया जाय।''

सिद्धार्थ और देवदत्त में से कौन महान् था और क्यों?

_____

_____

क्या आपने कभी किसी जन्तु की जान बचायी है? कैसे?

_____

_____

जन्तु आधारित जीविका

कुछ लोग जीव–जन्तुओं को मारकर अपनी जीविका चलाते हैं। जैसे– मछुआरा मछली मारता है। क्या ऐसा करना उचित है? अपना विचार लिखिए।

_____

_____

सँपेरा अपनी जीविका चलाने के लिए क्या करता है?

_____

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

_____

क्या उसे ऐसा करना चाहिए?

_____

_____

_____

हमने देखा कि सँपेरा साँप को पालकर अपनी जीविका चलाता है। क्या आप भी किसी पशु/पक्षी को पालते हैं? उसका रख–रखाव कैसे करते हैं?

_____

_____

_____

_____

जिन जन्तुओं को पाला जाता है उनकी सूची बनाइए।

_____ _____

_____ _____

_____ _____

जन्तुओं को क्यों पाला जाता है? अपने साथियों से चर्चा करके तालिका में जानकारी भरिए।

जन्तु का नाम	पालने का कारण
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

बबली ने पाला तोता

बबली ने एक तोता पाला है। उसने उसका नाम सुगनी रखा। वह उसे एक सुंदर पिंजड़े में रखती है। वह उसे प्रतिदिन खाने के लिए दाना–पानी देती है। सुगनी बबली की बातों को दुहराकर सबका मन बहलाती है। बबली को यह सब अच्छा लगता है। बबली जब स्कूल से पढ़कर आती है तो सुगनी शोर मचाने लगती है, ''बबली आ गई। बबली आ गई।'' अचानक एक दिन सुगनी बीमार पड़ी। खाना बन्द, शोर मचाना बन्द। बिल्कुल सुस्त पड़ी रहती। बबली उसे जानवरों के डॉक्टर के पास ले गई। डॉक्टर ने दवा दी पर साथ ही कहा कि सुगनी को पिजंडे से निकालकर खुले आसमान में छोड़ देना चाहिए।

डॉक्टर ने सुगनी को आजाद करने के लिए क्यों कहा होगा?

———————————————————————————————

———————————————————————————————

क्या आपको ऐसा लगता है कि सुगनी को पिंजड़े से आजाद कर देना चाहिए? क्यों?

———————————————————————————————

———————————————————————————————

आपके पालतू जानवर जब बीमार पड़ते हैं तब आप क्या करते हो?

———————————————————————————————

———————————————————————————————

हम अपनी जरूरतों के लिए जन्तुओं को पालते हैं। ऐसे जानवरों की हम देखभाल भी करते हैं। मगर पालतू जानवरों के अलावा भी कई जीव–जन्तु हैं। ऐसे जीव–जन्तुओं की हमारे लिए क्या उपयोगिता है? आइए विचार करें।

हिरण पौधा खाता है और बाघ हिरण को, बाघ खत्म हो गए तो हिरणों की संख्या बढ़ जाएगी और पौधे ———————————————————————————————

———————————————————————————————

———————————————————————————————

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

अब आप बताइए–

जानवरों की सुरक्षा क्यों करनी चाहिए?

_____

_____

_____

जानवरों की सुरक्षा कैसे करनी चाहिए?

_____

_____

_____

जंगली जानवरों की सुरक्षा के लिए कई जंगलों के विशेष हिस्सों को सरकार ने लोगों के दखल से बचाया है और उन्हें 'अभयारण्य' का रूप दिया है। ऐसे अभयारण्य बिहार में पश्चिम चम्पारण तथा बेगुसराय में हैं।

तेंदुआ

गुलाबी सिर वाला बत्तख

जंगल में तरह–तरह के जीव जन्तु पाए जाते हैं जो भोजन या आवास आदि के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। जंगल जैसे–जैसे खत्म किए जा रहे हैं वैसे–वैसे वहाँ के जीव–जन्तु भी कम होते जा रहे हैं। कई जीव–जन्तु जो कभी हमारे जंगलों में पाए जाते थे आज नहीं हैं या उनकी संख्या बहुत कम हो चुकी है। उदाहरण के लिए तेंदुआ और गुलाबी सिरवाला बत्तख जंगलों से लगभग खत्म हो गए हैं।

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

आपके आस–पास कौन–कौन से जन्तु दिखते हैं? उनकी सूची बनाइए। (अपने शिक्षक, दादा–दादी, माँ–बाबूजी से पूछकर)

_____ _____

_____ _____

इस सूची में किस जन्तु को आपने बहुत कम बार देखा है? ऐसा क्यों है?

_____

_____

ऐसे जानवरों के लिए आप क्या करना चाहेंगे?

_____

_____

_____

जरा सोचिए

अगर धरती से सारे जानवर खत्म हो गए तो क्या होगा?

_____

_____

क्या आप जानते हैं?

आपने खेजड़ली गाँव की अमृता की कहानी पढ़ी होगी। वह विश्नोई समुदाय की थी। विश्नोई समुदाय के लोग परम्परागत रूप से जीव–जन्तुओं का संरक्षण करते हैं।

विश्नोई राजस्थान की एक जनजाति है। विश्नोई का अर्थ होता है– उनतीस। उनके गुरु जम्भाजी के कहे अनुसार विश्नोई लोगों ने 29 बातों को अपनाया जिनमें जीव–जन्तुओं की देखभाल करना प्रमुख था। ये प्रकृति–प्रेमी होते हैं। वन तथा वन्य प्राणियों की रक्षा करते–करते ये अपनी जान तक दे देते हैं। ये जलावन के लिए हरे–भरे पेड़ों को काटकर इस्तेमाल में नहीं लाते हैं। सिर्फ सूखे घास या सूखी लकड़ी को जलावन के लिए इस्तेमाल करते हैं। इनके इलाके में कई जानवर जैसे– चिंकारा (धारीदार हिरण), साँभर तथा काले साँड़ आजाद घूमते देखे जा सकते हैं। विश्नोई लोग जन्तुओं का न शिकार करते हैं और न करने देते हैं।

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...